

ईश्वर स्वरूप महाराजनि अथ

लेखन आमच

स्वामी परमानन्द जीयिन्य
अमरनाथ यात्रा - लीला

संपादिका : प्रभा देवी

शारिका प्रकाशन, दिल्ली

ग्वड कथ

अज सदगुर महाराज सुन्दिस ज़ा दोहस प्यठ छि अस्य सारी
श्रीमती प्रभा जीयि वछि वालिन्जि हयोत त रुत कांछान यिमव
अरव मोलुल रत्न खटनु बजायि ब्रोन्ह कुन वातनोव त लोलु
बोछि हत्यन हन्जि बोछि ओनुख करार ।।

माजि कशीरि हुंध्य अज़ीम सूफी सन्त त गुणमात श्री
परमानन्दन अमरनाथ यात्रायि प्यठ अनुभव पोशि लन्जव सूत्य
शीरमुच त पूरमच भाव लीला कस सनाह भक्तस छनु व्यज़ ।
पननि अनुभवचि कहवचि प्य० अमि लीलायि हुन्ज़न स्वनु
लाच्यन गाहवेगाह खारिथ सान्य सदगुर महाराज अस्य पनुनि
दोजि प्यठ नवि आयि मोहुर दिथ अमिच भावथ करान । अथ्य
सूत्य उंगिथ गुयि अकि दोह सदगुरु त फिरुख यि लीला कागज़स
प्यठ । दुह श्रुक्य लीखिथ हयोतहस बययि साम । थरक दिथ
कोरुख शारिका जी फरमान । पम्पोशि अथव सूत्य कर अन्दताम
यि लीला शारिकी दीवीयि पूर । लीला लेखनुक बहानु बन्धव
सबबगार । शारिका जीयि करुनाव सदगुरन अथ्यमन्ज़ स्वरूप
साक्षातकार ।।

यिथु पाठय रूज यि लीला अरव अहम यादगार । अवमोरव
खोत अथ चाव ज्यादय हना यलि सदगोरन ध्युत हुकुम प्रभाजीयि
त वोनुरक, “प्रभय यि छि रखय, त अथ कर रखय” ।

प्रभाजीयि ति थुव यि पुत्यम्यव पंचाहव वुरियव प्यट शीरिथ
त पूरिथ त विजि विजि दितुरव अनुभव सदुरक्यव छिकव सूत्य
पनुनिस सदरस वुसजार । ।

यिथु पाठय पनुनि अथ लीछमुच यि रखय त तथ्य सूत्य
शारिका दीवीयि हुंदि अथ लीछमुत्य वाक्य श्रुक्य अभी चालि
भक्त्यन निश रोजनु मोरव कोर प्रभाजीयि बोड वोपुकार असि
प्यट । यी नजरि तल थाविथ वातनुव यि लीला असि ताम ।

असि छि आश जि प्रभा जी करन ब्रोट कुन ति गाशि
आगरच्यव जूचव सूत्य अज्ञानु गटि मंज हयनु आमत्यन असि
रखय रावट । ।

सदगुरु वारि हुन्द कुकिला

प्रो. मक्खन लाल

सदगुरु महाराज सुन्ध ।

जन्मदोह

१८ अप्रैल

रविवार, १९६३

ॐ

देहग्वफ सच्चिदानन्दलिङ्ग.
मन्पीठस् प्यर् बिहित निःसङ्ग.
लोक द्रष्टनस् कैलासशृङ्ग. मं० ॥ १ ॥

कन थाव सरस्वती क्य वनन्
वन्न वन्न पान् कुय ना सनन्
नाम रूप व्यन् भ्योन् भ्योन् ननन् मं० ॥ २ ॥

त्राहि मां पर यात्रा न्न कर
हरमोख पन्ननुय पान न्न वर
ग्वफ म्येन् ग्वफ क्य बयबर मं० ॥ ३ ॥

ग्वद् गणपत् यारुक् गणेश
दूर मो ज्ञान् रुजित् कु निश
मूलाधार द्वारुक् महीश मं० ॥ ४ ॥

ब्रह्मा सु युस हृष्टिकर्तार
 स्वाधिष्ठान पुराहयार
 षट्दल षट्मोख ज्ञान कुमार मं० ॥ ५
 शिवप्रार फेर कुण्डलिनी
 फेरवम् प्राण तत्त्र जल कण्ये
 सत् समन्दर स्रम् वोगण्ये मं० ॥ ६ ॥

अष्टदल सु द्राव पम्पोशढल्
 यूय फेर तोर कुन् मो ज्ञ ढल्
 व्येचार अच्छय संसार ढल् मं० ॥ ७ ॥

ह्युर ह्युर खस्त न्यूर न्यूरत्र वात्
 दूर प्योमुत् कुक कप्र वृणात्
 गत् प्रावणच्य भोज्ञ कथ त्र बात् मं० ॥ ८ ॥

तीर्थहस्त मां कुञ्च काँह पोदाह
 वीदन त्र कृंकार विन पदाह
 जीवन्मुक्त परमात्मा ॥ मं० ॥ ९ ॥

लीला यि कय अमरनाथ चीय
देहद्वार सान एकान्त चीय
शम दम गवक क प्रशान्त चीय मं० ॥१०॥

नाभिदीप्त दशदल संगमस
युम्य चावै लुक सत्संगमस

कृष्णसस्थावरजंगमस मं० ॥११॥

मन्दिर मुचत् उच्छत् चन्द्रयार
सपनीय तति हरिचन्द्रयार
विजयीश्वरी जन्म जन्म पार मं० ॥१२॥

क्रुज् त्रिवित् वात् ध्रुजवोर
लजसत्तु क प्रिवजटाच्चपोर ।
अनाहतमण्डलस्थावत्तखोर ॥ मं० ॥१३॥

कृष्ण् क्षोण्ड् सत् वात् क्षोण्डबल
विशुद्धचक्रच् जीवधल
दीव् पूज कर जीवभाव ढल ॥ मं० ॥१४॥

मंजुवात्ख्यलनसु त ख्येलनस
पानसु च पानसु मेलनस
तीलजन तेलसु तैलनस ॥ म०॥१५॥

वातुख्य च वति वतिवीरसिरन्
तति छिय न वातान्वीर सिरन्
वर्जवाव सुति बलवीरयिरन् ॥ म०॥१६॥

मन निष्ठा दूरकरलय विक्षेप
नावित् गणीष्ट सारलीय
जलनय तीय गोसु रतनदीप ॥ म०॥१७॥

पुशराव पान परमेश्वरसु
वति त रोज मामलीश्वरसु
प्रदिक्षिण करतु तत् मन्दिरसु ॥ म०॥१८॥
भगतीर्थ य्यठ कुय स्वर्गदार
वर्ग निष्ठा मशरित मो क प्रार
भाव अर्घि यौष्ठा पुजा च सार ॥ म०॥१९॥

रेञ्जलू त्रावित् रीञ्ज पल
 पावित निपूानसमो च ठल्
 धर्मस् ते कर्मस् सूर् फल् ॥ म० ॥ २० ॥
 कण्ठदीप्ता युस् छु त्तोदाह भुवन्
 नीलगंगि य्यठ् भोज वावजन्
 तति तोर पवनीय श्रोत दवन् ॥ म० ॥ २१ ॥
 मञ्जिल कु सञ्ज सञ्ज वारयाह
 छोट वनुन् मोट भोज वारयाह
 अक्रिया दारविय यी क्रिया ॥ म० ॥ २२ ॥
 लाञ्जिम् छु यी यी ती वोनुय
 ननवोर वाताषकौरकुनुय
 यकि युस् दपि पंकहावनय ॥ म० ॥ २३ ॥

ईष्टं देशं उत्तमं शेषनाग
 ह्यकस्वयं च तत्तिदिनरातज्जाग
 रागं नव प्रावमहा वैराग ॥ म० ॥ २४ ॥

त्यागपञ्च करित् पञ्चीतरंग
 सत्समृद्धरुकीयचित्तरंग
 पद्मनाभसुष्ठिययिम्तिरंग ॥ म० ॥ २५ ॥

अस्तु अस्तु स्वस्तु पञ्चालसीय
 सोऽहं भैरव बालसीय
 दुक् युक् न लगि अति लालसूय ॥ म० ॥
 २६

जिह्वरौज भोजजिह्व मरुन्
 गर्भयात्रायु अपोर तरुन्
 सति ये कृत्य ततिय शिव वरुन् ॥ म० ॥ २७ ॥

शो ज़रित् संकल्पनिशि मन
दैष्ट कालं रोस्त कालदैष्ट मन
शिहलीत् ईष्ट अनीष्ट मन॥म०॥२८॥

धिय परा पश्यन्ती पश्यन्
मध्यमा वैखरी मा पश्यन्
इच्छ प्रवस्था कथं तपश्चरन्॥म०॥२९॥

भाव प्रमरावतीयि च नाव
मलभभूत कल गृहस्थभाव
शिवपादन् पाम पुषिराव॥म०॥३०॥

रुदमुत् ग्वकि युस शोद्ध भौध
नैत्यद् धीन् तति अष्टसिद्ध
प्राकाशवत् किं ह न गट वध्॥म०॥३१॥

यस् क प्रतिमा वटकनाथ
 युस् कु भैरव वेताल सात्
 ह्यस् गिरि स्वयंवर वपूनात् ॥ म० ॥ ३२ ॥
 नंगमोत त्रु हेगू त मंगू रोज
 ईश्वर दर्शन प्राब्दभोज
 ईय कर ३ ध्यान दयू गूर सोज ॥ म० ॥ ३३ ॥
 ग्वफि मञ्ज ग्वफि वात् पनजे
 त्राव दीवी तू दिवता श्रै
 कृत्य कय न पिमू भवूत् कन्ये ॥ म० ॥ ३४ ॥
 कन्य मञ्ज लाल सुय मन्य मञ्ज
 कोम् कोञ् कोन्य रुक रो न्य मञ्ज
 तप कर त्र देह प्रारुन्य मञ्ज ॥ म० ॥ ३५ ॥

सोऽहं शब्द प्रेम प्रणव
 प्राज्ञा शैखरस त्राव रव
 तालव कभूतर आलव ॥ म० ॥ ३६ ॥
 सहस्रदललयगत्त्र प्राव
 ब्रह्मरन्ध्रस कु निष्कलस्वभाव
 दमचीय दमालि करतूक्राव ॥ म० ॥ ३७ ॥
 पकवुन क दारस मथ मथान्
 थान गौ च यति भयं हान वथान्
 समाधि मञ्ज तूथ ह्यु व्युत्थान् ॥ म० ॥ ३८ ॥
 पननुय कु पान् पानस त्रमुन्
 तूत् त्रमुन् तूत् समुन् तूत् शमुन्
 प्रत् वोहुन लोलनार प्रत् हमुन् ॥
 ३६

युत्य धान कुय न प्रोवमुत यमन्
तिम कूय जौन भ्रून्प्राव इमन्
परमात्मा पानसभनुन् ॥ म० ॥ ४० ॥

तति फोरूवुन् प्रनाहत् नाद्
स्वप्न अन्त सुषुम्णायि आद्य
तुर्या त् तुर्याती त सभाद्य ॥ म० ॥ ४१ ॥

जिस्में जोगी प्रौर पढा
जाग्रत स्वप्न पिंगला इडा
उतरा वहाँ कोई ना चडा ॥ म० ॥ ४२ ॥

भौरा कमल में जब बडा
अपना सिबानी सब गढा
और था कोई नाही बडा ॥ म० ॥ ४३ ॥

कीरित् इडायि किल्य संगमस
 रसपूर्ण मय रवेत्मुत वस
 तति प्रादु करान् छिय यसभ तस॥म०
 ४४॥

गवफ चूल च त्रवित् तस शिवस
 तस रोस रोजिय न कांह द्यतस
 पान् पुषिरावुनकुय द्यु तस॥म०॥४५॥

श्रेव श्रेव दयान् निशि मो च ढल्
 चूचम चिय प्रकृत पुरुषसमू ढल्
 कोर् यि चित्रकार मायाधि छल्॥म०॥४६॥

यव किञ् शिव ज्ञानक् त्रौपोर
 रोजनय न कुन्य पापञ द्य भौस्
 भवसर सार श्रेव श्रेव तौर॥म०॥४७॥

पुनर्गच्छन् कुय च्यन्मात्रा

ज्ञानियस कय बुद्धिम् यात्रा

पनन्यीय वनन्यीय कुय वारता ॥ म० ॥ ४८ ॥

तुम नौ द्वारवात नौ दल

वतिर ज्ञलिय जन्मच वदल

देहयात्रा गयि यी सुफल ॥ म० ॥ ४९ ॥

देह कुय वौन्मुत् देव द्वार

संसार जंगलुक् देवद्वार

ध्यान कर ध्यान ज्ञान देह उद्धार ॥ म० ॥ ५० ॥

फैरुन कुय न अद् त्रिभवनस्

वातिर यथ विष्णुभवनस्

ममलस् त्र कमलस् भवनस् ॥ म० ॥ ५१ ॥

बुज्जनस् कु जलनिर्मल उज्ज्वल
नित्यं न्येम् युस् भवानिबाल तल
बुदिमन् वात् भवानिबाल तल ॥ म० ॥ ५२ ॥

भर्गपादपूज संसर्गन्यैर
चमकीय तीज कासीय अन्यैर
जलनय च्छ जन्मजन्मक भवैर ॥ म० ॥ ५३ ॥

भर्ग दीप नौ देर्गाह च मान
स्वर्गलोककीय कीय तस् नमान्
यष्टदीवी कृ पनत्पीय प्रमान ॥ म० ॥ ५४ ॥

देवी स्व पार्वती सती
माँज् यस वज्रिक् मीनावती
शेव तस् वरुनस् प्राव ततीय ॥ म० ॥ ५५ ॥

शैव शक्तप्रकं नाम रूप भ्युन्
पान् भोजं पान् क्या भ्युन् वनुन्
परमानन्द पान् भनुन् ॥ म० ॥ ५६ ॥

हे दीवीम्य दया करुम्
कर्म फल बुद्धितय म्य वरुम्
हर हर हर पाप शाप हरुम् ॥ ५७ ॥
मन् स्थिर कर पूजोन् प्रभू ॥ ५७ ॥

मन्त्र पर शिव शम्भू
मन् स्थिर कर पूजोन् प्रभू ।
मन्त्र पर शिव शम्भू
मन् स्थिर कर पूजोन् प्रभू ॥
